Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

मृगनयनी: परंपरा से विद्रोह एवं प्रेम का उद्दाम स्वरूप

डॉ. राहुल
महिला अध्ययन विभाग
डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू, म. प्र.
ईमेल- rahul.or.nishant@gmail.com

सारांश

इतिहास के हर एक काल खंड में स्त्रियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की है। वह समय चाहे हजार साल पहले ही का क्यों न हो? पितृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था में स्त्रियों की स्थिति कभी भी बेहतर नहीं रही है लेकिन उससे ऊपर उठकर भारतीय नारियों ने आम जन-मानस में स्त्री चेतना को जागृत किया है। पौराणिक साहित्य में भी गार्गी, अपाला, घोषा, मैत्रयी जैसी विदुषियों का उल्लेख मिलता है। बाद के समय में अंडाल, महादेवी अक्का, लल्ल्द और मध्य काल आते-आते मीरा नारी चेतना एवं सामंतवादी पितृसत्ता से विद्रोह करने वाली नायिका के रूप में उभरती हैं। भारतीय समाज में कुछ ऐसी ऐतिहासिक नारियां हैं जिनके अंदर पितृसत्ता से टकराने का हुनर है। स्त्री चेतना से परिपूर्ण ऐसी ही नायिकाओं को वृंदालाल वर्मा ने अपने उपन्यास का विषय बनाया है। वृंदालाल वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों की नायिकाएँ अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों से वाकिफ हैं और उन्हें अपना अधिकार भी मालूम है। ये नायिकाएँ अबला नहीं, बल्कि सबला हैं। अपने अधिकारों के लिए ये नायिकाएँ पुरुषों से घृणा नहीं करती बल्कि रूढ़ियों एवं स्त्री-द्वेषी परंपरा से विद्रोह अवश्य करती हैं। शोषण के विरुद्ध मौन नहीं रहती, वरन् आगे बढ़कर उसका सामना और सवाल करती हैं।

बीज शब्द - प्रेम, परंपरा, पितृसत्ता, एवं स्त्री चेतना

प्रस्तावना

'मृगनयनी' उपन्यास में लेखक ने अटल और लाखी के प्रेम को इसी रूप में चित्रित किया है। जाति का बंधन तत्कालीन सामंती पितृसत्तात्मक समाज में गहरे व्याप्त है। पुरुष दूसरी जाति की स्त्री से प्रेम कर सकता है, दैहिक संबंध रख सकता है, लेकिन विवाह नहीं कर सकता। समाज के इस दोगलेपन पर निन्नी करारा व्यंग्य करती है- "रखेली की तरह रख ले तो गाँव के पंच कुछ भी नहीं कहेंगे, ब्याह हो जाये तो

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

मानो उन पर गाज गिर पड़ेगी।"[1] सामाजिक रूढ़ियों का विरोध भी सर्वाधिक नायिकाएँ ही करती हैं। समाज में जो मान्यताओं का दोहरापन है उसको सबसे अधिक स्त्री को ही झेलनी पड़ती है। वर्मा जी ने 'मृगनयनी' उपन्यास में लाखी और अटल के इस अंतर्जातीय विवाह का समर्थन कर तत्कालीन समाज के धर्माधिकारियों को करारा जबाब दिया है और साथ ही स्त्री स्वतंत्रता को मुखर अभिव्यक्ति भी दी है। उपन्यासकार ने मृगनयनी और लाखी का जिस रूप में चित्रण किया है वह नवजागरण काल में स्त्री की उस चेतना के साथ है जहां स्त्रियों से संबंधित रूढ़ियों पर प्रहार हो रहा था। जाति और धर्म की बंदिशों की मजबूत गांठ को ढीला करने का प्रयास तेज हो रहा था।

शोध प्रविधि- इस शोध आलेख में विवेचनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है. वृंदालाल वर्मा के उपन्यास मृगनयनी में स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति एवं पितृसत्तात्मक संरचना को नारीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है।

शोध उद्देश्य-

- वृंदालाल वर्मा के उपन्यास मृगनयनी में चित्रित स्त्री-चेतना को उद्घाटित करना।
- मृगनयनी और लाखी के पितृसत्ता को किस रूप में चुनौती देती हैं।

विवेचन-

वृंदालाल वर्मा जी ने स्त्री पात्रों को केवल अपने उपन्यासों में शामिल भर नहीं किया है, बल्कि उन्हें स्त्री चेतना से लैस भी किया। इस संदर्भ में रामदरश मिश्र कहते हैं –"इन नारियों में कुसुम से भी मृदुल हृदय है। अपने प्रेमियों के प्रति संसार की कोमल भावनाओं एवं मानवीय गुणों के प्रति उनके हृदय में एक बड़ा कोमल स्थान है। झाँसी की रानी ऊपर से रणचंडी दिख पड़ती है, किन्तु उसके हृदय में प्रजा के प्रति, सखियों के प्रति, बच्चों के प्रति बड़ी ममता है। वह कला कृतियों का विनाश देखकर रो पड़ती है। वह अंत में यह स्पष्ट करती है कि– "ये युद्ध नन्ही कला कृतियों की रक्षा के लिए होते हैं। कुमुद तो कोमलता और शालीनता की देवी है। तारा एवं कचनार चित्त की कोमलता में मूर्तिमान हैं।"[2] मिश्र जी ने वर्मा जी के स्त्री पात्रों एवं प्रेम के संदर्भ में जो बात कही है वह इनके अधिकांश उपन्यासों में दृष्टिगत होता है। वृन्दालाल वर्मा ने प्रेमिकाओं की जो संरचना गढ़ी है वह प्रतिमूर्ति के रूप में अधिक है। इनकी ये प्रेमिकाएँ रागात्मकता के साथ ही अस्तित्वमूलक भी हैं, लेकिन परंपरा और प्रेम में समंजस्य के साथ।

[1] वर्मा, वृन्दावन लाल मृगनयनी पृष्ठ सं. 268

[2] मिश्र, रामदरश, ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दालाल वर्मा, पृष्ठ सं. 49

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

वर्मा जी ने जनश्रुतियों के आधार पर मृगनयनी की रचना की है जिसमें निन्नी (मृगनयनी) और लाखी के उद्दाम प्रेम को मुखर अभिव्यक्ति दी है। जाति व्यवस्था से ग्रसित समाज में अंतर्जातीय विवाह सहज रूप में स्वीकार्य नहीं है। उपन्यासकार ने आधुनिक चेतना से संपृक्त होकर लाखी और अटल के प्रेम को जो स्वरूप प्रदान किया है वह आधुनिक स्त्री-चेतना के साथ मेल खाता है। मृगनयनी का भी प्रेम प्रसंग है, लेकिन वह लाखी (अहीर) अटल (गुजर) की तरह नहीं है। मृगनयनी के प्रेम में विद्रोह नहीं है, लेकिन वह अपने अस्तित्व के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करती। बालपन से ही मृगनयनी न केवल पराक्रमी थी, बल्कि अपने सौन्दर्य, अल्हड़ता, वाकपटु, हास-परिहास एवं अपनी मधुर स्वर लहरियों से भी प्रभावित करती है। निन्नी (मृगनयनी) और लाखी की दोस्ती हर जगह साझा होती है। तीर-कमान लेकर चाहे शिकार का खोज हो, चाहे स्वर लहरियों के माध्यम से मधुर तान छेड़ना हो। लाखी उसके मधुर स्वर की प्रशंसा करते हुए कहती है- "तुम्हारा गला इतना मीठा है कि जब तुम गाती हो तो जान पड़ता है जैसे कोयल कूंक रही हो।"[3] लेखक ने नवजागरण काल की स्त्री-छवि गढ़ने का प्रयास किया है। स्त्री की रेडिकल छवि वर्मा जी ने अपने किसी भी उपन्यास में नहीं सृजित किया है।

पराक्रमी, बहादुर, रण कौशल से युक्त स्त्री की छवि है जो भारतीय संस्कृति के साथ स्वतंत्रता को अभिव्यक्त करती है। युवती मृगनयनी अपने जीवन साथी का चुनाव स्वयं करना चाहती है तभी वह लाखी से इस संबंध में बात करते हुए कहती है- "भईया से कहना कि सगाई की चर्चा को आगे न बढ़ावें। मैं ब्याह न करूंगी।"[4] किसी युवती का यह कहना कि मैं ब्याह न करूंगी आधुनिक स्त्री-चेतना का द्योतक है। अपने मन पसंद का जीवन साथी चुनना हर किसी का अधिकार है। वर्मा जी ने वर चुनने की अतीत की परंपरा स्वयंवर को आधुनिक परिपेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। वर्मा जी ने मृगनयनी के माध्यम से इसे आम युवतियों की अभिलाषा के रूप में प्रस्तुत किया है। पति चुनने का अधिकार केवल राजकुमारियों को ही नहीं है, आमजन भी अपना जीवन साथी चुन सकते हैं। मृगनयनी ने अपने भाई अटल से ब्याह के संबंध में सीधे तो नहीं कहा, लेकिन लाखी के माध्यम से यह कहलवाना मर्यादित इनकार है। विवाह से पूर्व मृगनयनी का यह कल्पना कि " रानियाँ तो पर्दे में मुँह छिपाये बैठी रहती हैं। सुनती तो यही आई हूँ, परंतु क्या उनके हाथ-पैर इतने निकम्मे होते होंगे कि अपने ऊपर आँख उठाने वाले पुरुषों को घूंसे से धरती न

[3] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी, पृष्ठ सं.18
[4] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं.128

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

सूंघा सके। वैसे स्त्रियाँ होंगी ये।"[5] मृगनयनी का यह सोचना उसके स्वतंत्र ग्रामीण चेतना और राजमहलों में रहने वाली रनियों के प्रति एक जिज्ञासा भी है। उसके मन में यह जिज्ञासा भले ही नटनी ने जगाया है, लेकिन बहुत ही सहज जिज्ञासा है जिसे वह जान लेना चाहती है। इसके साथ ही वह आधुनिक स्त्री विचारों से भी लैस नजर आती है। स्त्रियों को घूरने वालों को जबाब देने की बात करती है। मृगनयनी स्त्री होने के कारण किसी अन्याय को चुपचाप नहीं सहती, बल्कि अपने शौर्य एवं पराक्रम के बल पर उसका प्रतीकार करती है और उचित जबाब देती है।

मृगनयनी महत्वाकांक्षी है। उसे अपना भला-बुरा पता है। उसने जो सपना संजोया है उसे अपने दम पर पाना चाहती है। मृगनयनी के महत्वाकांक्षा को वर्मा जी ने इसे सीधे न कहकर नटनी के माध्यम से व्यक्त किया है और इसे भाग्यवाद से भी जोड़ा दिया है। नटनी निन्नी (मृगनयनी) का हाथ देखकर भविष्यवाणी करती है- "तुम तो बेटी बड़ा भारी राज्य हाथ में लिखाकर चल रही हो। राजा की नहीं किसी बड़े महाराजा की रानी बनोगी। झूठ निकले तो मेरी जीभ काटकर फेंक देना।"[6] गिन्नी के पराक्रम, शौर्य एवं सौन्दर्य की चर्चा ग्वालियर के राजा मान सिंह तक पहुँचती है तो राजा मान सिंह मृगनयनी के पराक्रम एवं अपूर्व सौन्दर्य का दर्शन करने राई गाँव पहुँचते हैं। मृगनयनी ने राजा मान सिंह के सामने एक ही तीर से दुर्दांत अरने भैंसे को मारती है और सिंह पकड़कर मरोड़ देती है। यह देखकर राजा अचंभित होते हैं और मृगनयनी को अपनी रानी बनाने का प्रस्ताव देते हैं। उपन्यासकार ने यहाँ भी प्रेम की लालसा या कहें कि प्रेम की आसक्ति को पुरुष के नजरिए से ही व्यक्त किया है।

वर्मा जी ने इस उपन्यास में मृगनयनी के मनोभावों का जो चित्रण किया है उसमें पितृसत्तात्मक भाव ध्वनित होता है। स्त्री के लिए संकोच को कलात्मक बनाते हैं। "कनखियों से देखते हुए, धड़कते कलेजे और अर्धस्मित के साथ निन्नी ने अपना काँपता हुआ धूल भरा हाथ उसके हाथ में दे दिया और बोली- मैं नहीं जानती क्या कर रही हूँ। मेरी पत रखना।"[7] अपने पराक्रम से सबको अचंभित करने वाली मृगनयनी राजा मान सिंह के प्रणय निवेदन को अस्वीकार तो नहीं करती, लेकिन अपने फैसले पर सशंकित जरूर रहती है। उसे इस बात का अंदाज नहीं है कि वह सही कर रही है या गलत। राजा मान सिंह उसके इस आशंका को दूर करते हैं और आस्वस्थ करते हुए कहते हैं-"परमात्मा मेरा साक्षी है। तुम सदा

[5] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 16
[6] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 183
[7] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं.183

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

मेरे हृदय की रानी और जीवन की शोभा रहोगी।"[8] अल्हण एवं चंचल मृगनयनी ग्वालियर की रानी बनने के बाद धीर, गंभीर कर्तव्यपरायण पत्नी के रूप प्रतिष्ठित होती है। भारतीय संस्कृति और पत्नी के आदर्शों का पालन करती है। वर्मा जी ने निन्नी को परिवेश बदलते ही मृगनयनी के रूप परिवर्तित कर दिया है। अपनी चंचलता को छोड़ वह साहचर्य जीवन के अनुभव को ग्रहण करती है। वह मान सिंह से कहती है- "मैं चाहती हूं, आपका शरीर, उत्साह यश और सूरमापन दिन दूना दृढ़ और चमत्कार से भरा हुआ बना रहे। जिस राजा में ये गुण हों, उसका राज आजकल दो महीने भी नहीं टिक सकता।"[9]

स्त्रीवादी चेतना के साथ मृगनयनी राजा मान सिंह से कहती है- "नियम संयम के साथ रहिए और मुझको भी रहने दीजिए। मैं चाहती हूँ कि उन गुणों के साथ मेरी देह में भी वही बल बना रहे जिसको राई से लेकर आई हूँ, जिसके भरोसे मारे हुए सूअर को पीठ पर लाद कर गाँव तक लाई थी, जिसके बूते अरने भैंसे को मारा था।"[10] पत्नी के कर्तव्य का निर्वहन करते हुए भी वह राजा मान सिंह को संयमित जीवन जीने आग्रह करती है और अपने दैहिक ताकत को बनाए रखना चाहती है। वैवाहिक जीवन में स्त्रियाँ अपने सौन्दर्य एवं लावण्यता को बनाए रखना चाहती हैं, जबकि मृगनयनी शारीरिक सैष्ठव और ताकत से कोई समझौता नहीं करना चाहती। राजा मान सिंह मृगनयनी के इन तार्किक बातों को सुनकर कहते हैं कि "तुम सचमुच बड़ी हो। मुझसे बड़ी और बहुत अच्छी। तुम संयम से प्रेम को अचल बनाती हो और अपने विकार से उसे चंचल कर देती हो।"[11]

मधुर स्वर लहरियों की धनी मृगनयनी संगीत एवं कला में भी निपुण है। कला के प्रति सहृदय एवं जिज्ञासु मृगनयनी को देखकर पंडित वैद्यनाथ उसे पूर्वजन्म में संगीत का अवतार मानते हैं। अनगढ़ संगीत से शास्त्रीय संगीत में परांगत मृगनयनी अपने इन्हीं गुणों से राजा मान सिंह को भी समय-समय कर्तव्यबोध कराती रहती है। वह राजा मान सिंह से कहती है-" वीणा बजाते-बजाते काम पड़ने पर यदि तुरंत ही उछलकर कमान न कसी, ध्रुपद को गाते-गाते शत्रु के सामने आ खड़े होने पर तुरंत गरज कर चुनौती न दे पाई, जिन कानों में मीठे स्वर धार की रस बह बह कर जा रही थी, उन कानों में यदि रणवाद्यों और खड़कों की धुन न समा पाई तो ऐसी वीणा सेज और ध्रुपद के तानों का काम ही क्या?"[12]

---

[8] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं.183
[9] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं.169
[10] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 196
[11] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं.187
[12] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 322

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

मृगनयनी का चरित्र रचते समय वर्मा जी ने सामंजस्य बैठाने का पूरा प्रयास किया है। अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व पर जरा भी आंच न आने देने वाली मृगनयनी गरिमा के साथ रानी के कर्तव्यों का भी पालन करती है। मृगनयनी पराक्रमी है, अधीनता स्वीकार नहीं है स्त्री चेतना से भरपूर है, लेकिन विद्रोहिणी नहीं है। मृगनयनी को समंजस्य बैठाने आता है। ग्वालियर की रानी बनने के बाद उसे किसी तरह की कोई समस्या नहीं हुई।

वर्मा जी ने 'मृगनयनी' उपन्यास में निन्नी की बचपन की दोस्त लाखी के चरित्र को भी स्त्री चेतना से युक्त बनाया है। बचपन से ही लाखी ने संघर्षों को झेला है। सिकंदर लोदी के आक्रमण के बाद लाखी अपनी के साथ मृगनयनी के गाँव राई में आकार बस जाती है। समवयस्क मृगनयनी से उसकी दोस्ती प्रगाढ़ होती चली जाती है। और यह दोस्ती मृगनयनी के भाई अटल के प्रेम तक पहुँचती है। लाखी की माँ की मृत्यु के बाद वह मृगनयनी के साथ ही रहने लगती है। मृगनयनी के साथ रहते-रहते वह उसके भाई अटल के और करीब आ जाती है और अटल की प्रेयसी बन जाती है। सामंतवादी पितृसत्तात्मक जातीय व्यवस्था में किसी स्त्री का प्रेम करना ही परम्पराओं से विद्रोह है। विजातीय प्रेम तो और भी विद्रोह की मांग करता है जो कि सामंती जातीय व्यवस्था में जरा भी स्वीकार्य नहीं है।

प्रेम की परिणति विवाह के रूप जब हो रहा था तो उसमें व्यवधान उत्पन्न किया जाता है तो वह अपने स्वाभिमान को व्यक्त कराते हुए कहती है कि- "मैं अकेली बनी रहूँगी। किसी की रखैली बनकर रहने से पहले साक नदी में गले से पत्थर बांधकर डूब मरना भला है।"[13] अपने प्रेमी अटल की रखैल बनकर सामाजिक तिरस्कार के साथ रहने से अच्छा है मृत्यु का वरण करना। प्रेम में सामाजिक तिरस्कार एवं अपमान की नहीं, बल्कि परम्पराओं एवं रूढ़ियों से विद्रोह की जरूरत होती है। सच्चा प्रेमी जाति बंधनों एवं अन्य प्रतिरोधों को तोड़ते हुए प्रेम के पथ पार आगे बढ़ते हैं। अटल ने भी प्रेमियों वाले रास्ते का चुनाव किया और लाखी से विवाह कर प्रेम की उद्दाम भावना को आगे बढ़ाया। प्रेम में केवल पाना ही नहीं है, बल्कि प्रेम में बहुत कुछ खोया भी जाता है। प्रेम में आसक्त कोई भी जोड़ा अनासक्ति नहीं चाहता। वह प्रेम की कोमल भावनाओं के साथ अपनी हर एक सांस के साथ जीना चाहता है। जीवन के अंतिम समय तक अटल के साथ रही लाखी कहती है कि- "ब्याह कर लेना। अपनी जात-पात में।"[14]

[13] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 79

[14] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 430

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

लाखी का यह कहना प्रेम से पलायन नहीं है और न ही जाति व्यवस्था को मजबूत करने की चाह। एक प्रकार से सामाजिक व्यवस्था के उस पाखंड और कठोरता को दिखाता है जिसमें एक प्रेमी-प्रेमिका को विवाह करने की अनुमति नहीं देता, बल्कि इसके उलट उन पर कई तरह के सामाजिक प्रतिबंध लगा देता है। अटूट प्रेम की अनुभूति ही लाखी को यह कहने पर विवश करता है कि अब तक जितना कुछ सहा जो कि असहनीय रहा है, इसलिए अपने प्रेमी के जीवन सुख एवं उल्लास की कामना ही उसका अंतिम वक्तव्य है। अपने प्रेमी अटल के लिए जीवन के अंतिम समय में उल्लास की कमाना यह प्रकट करता है कि लाखी का प्रेम अटल से किस तरह का था।

लाखी को अपने स्वाभिमान से किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार्य नहीं है। वह चाहे कितना ही गरीबी एवं कष्टप्रद जीवन व्यतीत करे। निन्नी के विवाह के अवसर पर लाखी को कुछ अन्य स्त्रियों द्वारा व्यंग्य वाण सुनने को मिलता है, एक स्त्री मिथ्या बाते करते हुए कहती है- "एक कहती थी की निपूत निन्नी रानी बनाकर पान चबाएगी और लाखी चेरी बनकर निन्नी की पीक को गदेली पर लेगी, और राजा की सेज को रोज बिछाया उठाया करेगी सुंदर सलोनी है न।"[15] इस बात को सुनकर उसके स्वाभिमान को ठेस लगती है, लेकिन वहाँ पर उसने धैर्य से काम लेते हुए शांत रही किसी से कुछ नहीं कहा और न ही कोई प्रतीकार किया। बाद में जब अटल उसे ग्वालियर चलने को कहता है तब उसका स्वाभिमान जाग उठता है और वह कहती है- "कोई मुझको यदि किसी की चेरी कहे, चाहे वह मेरी निज ननद ही क्यों न हों, तो मैं नहीं सह सकूँगी और न यह सहूँगी कि कोई तुमको राजा का दास या रोटिमारा कहे। हम लोगों को भगवान ने भुजाओं में बल दिया है और काम करने की लगन। कुछ करके ही ग्वालियर चलेंगे।"[16]

अपने स्वाभिमान की ताकत पर जीवन के अंतिम समय में भी उसका शौर्य कम नहीं होता। वर्मा जी ने जिस आत्म गौरव एवं स्वाभिमान के साथ लाखी के अंतिम समय में चित्रित किया है वह लेखक की विश्वासपात्र की तरह दिखती है। इस संदर्भ में डॉ. सतेंद्र का मंतव्य हैं- लाखी और मृगनयनी पर तुलनात्मक दृष्टि डालते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वृन्दावन लाल वर्मा स्वयं लाखी के साथ हैं, पर उनका अहंकारी उपन्यासकार मृगनयनी के साथ गया है। लाखी के पैर परिस्थितियों के कारण ही सही भूमि पर रहे हैं, जबकि मृगनयनी के पैर विवाह के बाद पृथ्वी से उखाड़ गये हैं। पृथ्वी पर से उखड़े पैरों को वर्मा जी ने अपनी लेखनी की करों पर संभालने की चेष्टा की है। पर उनके अपने हाथ लाखी के पीठ पर

[15] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 190
[16] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी पृष्ठ सं. 200

Year-4 Volume: I, Jan-March, 2022 ISSN: 2582-1296
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities

ठोकते रहे हैं।"[17] डॉ.सतेन्द्र ने जिस बात की तरफ इशारा किया है वह उपन्यासकार के व्यक्तित्व को भी बताता है। लाखी भले ही स्त्री चेतना की झण्डाबरदार न हो, लेकिन अपने स्वाभिमान से कोई समझौता नहीं करती। सामंती पितृसत्तात्मक विचारधारा का प्रतीकार अटल से अंतर्जातीय विवाह करके देती है। वह कोई ऐसी बात नहीं कहती जिससे लगे कि वह स्त्री चेतना की ध्वजावाहक है, लेकिन प्रेम के प्रति समर्पण और मानवीय मूल्य के कारण वह स्त्री जीवन के संघर्ष की मिशाल है।

वृंदालाल वर्मा जी ने 'मृगनयनी' उपन्यास में स्त्री-चेतना का जो रूप रचा है वह लाखी और मृगनयनी के चरित्रों में व्यक्त हुआ है। मृगनयनी और लाखी के प्रेम के माध्यम से प्रेम का एक मानदंड बनाया गया है। मृगनयनी के प्रेम में जहां उच्च कुलीन नगरीय बोध का झलक दिखता है, वहीं लाखी का प्रेम निच्छल, निष्कपट, स्वछंद, स्वार्थरहित एवं ग्रामीण का प्रतिनिधित्व करता हुआ जान पड़ता है। मृगनयनी जहां समाज, परंपरा, कर्तव्य और स्व-अस्तित्व के साथ समंजस्य बैठाकर चलती है वहीं लाखी जाति बंधन को तोड़कर, पारंपरिक रूढ़ियों का प्रतिरोध करते हुए स्वाभिमान के साथ मानवीय गरिमा को अंतिम समय तक बनाए रखती है। मृगनयनी के प्रेम को वर्मा जी ने उच्च आदर्शों के साथ स्थापित करने का प्रयत्न किया है, जबकि लाखी के चित्रण में वर्मा जी ने स्त्री-चेतना के अनेक अवयव का मिश्रण किया है और उसे शिखर तक पहुंचाया है। वर्मा जी ने इस उपन्यास के माध्यम से उस समाज व्यवस्था पर भी कुठाराघात किया जो मनुष्य को सबसे पहले जाति, वर्ग, समुदाय के रूप में चिन्हित करते हैं।

मृगनयनी का कला प्रेम और संगीत में निपुण होना यह दिखाता है कि जीवन में इसका क्या महत्व है। इस उपन्यास में जीवन की सार्थकता पर अधिक ज़ोर दिया गया है। मृगनयनी कहती है कि- संकल्प और भावना जीवन तरवड़ी के दो पलड़े हैं। जिसको अधिक भार से लाद दीजिये वही नीचे चला जायेगा। संकल्प कर्तव्य है और भावना कला।"[18] वर्मा जी ने इस उपन्यास में संतुलन और समन्वय के साथ जीवन का चित्रण किया है।

निष्कर्ष

प्रेम में आदर्श स्थिति बनी रहे इसके लिए वर्मा जी भरसक प्रयास करते हैं। मृगनयनी और लाखी के माध्यम से उपन्यासकार ने प्रेम का जो स्वरूप चित्रित किया है वह आदर्श एवं विद्रोह के बीच समंजस्य बैठाने का भी है। वर्मा जी की पूरी कोशिश होती है कि वह प्रेम का आदर्श रूप ही प्रस्तुत करें। 'मृगनयनी'

[17] डॉ. सतेन्द्र, मृगनयनी कला और कृतित्व, पृष्ठ सं. 35
[18] वर्मा, वृन्दावन लाल, मृगनयनी, पृष्ठ सं. 449

उपन्यास में लाखी के माध्यम से सामंती पितृसत्तामाक व्यवस्था पर प्रहार तो करते हैं, लेकिन प्रेम का वह रूप नहीं गढ़ पाते जहां स्त्री स्वतंत्र होकर अपनी अभिव्यक्ति कर सके। वृन्दावन लाल वर्मा के अधिकांश ऐतिहासिक उपन्यास स्त्री प्रधान हैं। स्त्रियों का जीवन ही उपन्यास का केंद्रीय कथ्य हैं। उच्च कुलीन नारियों के अलावा वर्मा जी ने ऐसी स्त्रियों को उपन्यास में नायिका बनाया है जी हाशिये की समाज या कहें की उपेक्षित जन समुदाय से आती हैं। वर्मा जी स्त्रियों को पुरुष के समान अधिकारों की बात करते हैं, लेकिन आदर्शवाद की वकालत करते हुए। वृंदालाल वर्मा जी की नायिकाएँ परंपरा, रूढ़ियों, आडंबर का मुखालफत तो करती हैं, लेकिन संस्कारों का ऐसा जाल है कि उससे बाहर नहीं निकल पातीं।

संदर्भ

वर्मा, वृन्दावन लाल. (2018). *मृगनयनी*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.

डॉ. सतेन्द्र. *मृगनयनी कला और कृतित्व*. ग्वालियर: साहित्य कला मंदिर

मिश्र, रामदरश, *ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दालाल वर्मा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

मिश्र, रामदरश .(1996).हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

राय, गोपाल. (2006). *अतीत, इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास,* समकालीन भारतीय साहित्य, जनवरी-फरवरी

The Asian Thinker